International Journal of Research in Economics and Social Sciences(IJRESS)
Available online at: http://euroasiapub.org
Vol. 9 Issue 3, March- 2019
ISSN(o): 2249-7382 | Impact Factor: 6.939 |

''कृषि भूमि में इन्दिरा गांधी नहर जल उपयोग, उत्पादन एवं फसलों के प्रकार– हनुमानगढ़ एवं श्री गंगानगर जिले के विशेष सन्दर्भ में''

राजेन्द्र सिहाग
शोध छात्र
भूगोल विभाग
टांटिया विश्वविद्यालय, श्री गंगानगर

डॉ0 सुनील कुमार
भूगोल विभाग
अधिष्ठाता कला संकाय
टांटिया विश्वविद्यालय, श्री गंगानगर

शोध का परिचयात्मक विश्लेषण

श्रीगंगानगर व हनुमानगढ़ जिले में नहरी सिंचाई जल उपलब्ध होने के कारण अर्थव्यवस्था का आधार स्तम्भ कृषि है। अतः भूमि और कृषि का महत्व बहुत ज्यादा है। जिलों में नहरी सिंचाई जल उपलब्ध होने से यहां जनसंख्या में भी उतरोत्तर वृद्धि हुई है। जनसंख्या बढ़ने से कृषि स्वरूप में भी भारी परिवर्तन आया है। सिंचाई जल की सुविधाओं से यहां के कृषक जीवन निर्वाह कृषि को व्यवसायिक कृषि में बदल लिया है। बढती जनसंख्या की भोजन आपूर्ति के साथ–साथ कृषि आधारित अनेक निर्माण उद्योग भी स्थापित हुए है। भारत की कृषि में हो रहे अनेक परिवर्तन से जिले की कृषि भी अछूती नहीं रही, यहां की कृषि में न केवल यंत्रीकरण में वृद्धि हुई, अपितु सिंचाई सुविधा से रासायनिक खाद, जैविक खाद, कीटना"ाक दवाईयां व अधिक उपज देने वाले बीजों का प्रयोग करके उत्पादन की दक्षता में भी भारी परिवर्तन आया है बल्कि कृषि पद्धति के तकनीक में भी व्यापक सुधार हुआ है। जिससे कृषि उत्पादन में उतरोत्तर वृद्धि हुई है। फिर भी जिलो की उत्पादकता उत्पादकता कम है। क्योंकि इसके साथ जनसंख्या भी बढती जा रही है। जिसकी आव"यकता की पूर्ति हेतु प्रति इकाई क्षेत्र से अधिकतम उत्पादन करना आव"यक है। जिलो की उत्पादकता कम होने का प्रथम कारण नहरी सिचांई जल सुचारू रूप से न चलना रहा है। वहीं दूसरा कारण प्राकृतिक संसाधन, कम व अवि"वसनीय वर्षा, प्राकृतिक आपदा का रहा है।

प्रस्तावित शोध के उद्देश्य

श्रीगंगानगर व हनुमानगढ़ जिलो में शस्य गहनता व भूमि उपयोग को ज्ञात करना है, जिसके माध्यम से कृषि योजना निर्माताओं, प्र"ाासकों एवं अन्य सम्बन्धित व्यक्तियों को जिलें के

International Journal of Research in Economics and Social Sciences(IJRESS)
Available online at: http://euroasiapub.org
Vol. 9 Issue 3, March- 2019
ISSN(o): 2249-7382 | Impact Factor: 6.939 |

कृषि विकास योजनाओं में संलग्न है, लाभान्वित होकर कृषि विकास के लिए उचित योजना का निर्धारण कर सकें व सामाजिक व आर्थिक परिवर्तन से परिचित हो सके। इसके अतिरिक्त इस अध्ययन में यह भी ज्ञात करने का प्रयास किया जाएगा कि भू–उपयोग व शस्य गहनता के लिए क्या–क्या संसाधन जुटाने के प्रयास किये जाये। जिससे शस्य गहनता व भू–उपयोग में सुधार किया जा सके। उपरोक्त तथ्यों को ध्यान में रखते हुए अध्ययन के निम्न उद्दे"य है–

1. विगत द"ाकों में जिले के भू–उपयोग व शस्य गहनता में हुए परिवर्तन का तहसीलवार आंकलन करना।
2. जिले में भू–उपयोग, शस्य गहनता व दक्षता के लिए उपलब्ध आधारभूत सुविधाओं का क्षेत्रीय आंकलन करना।
3. जिले में भू–उपयोग, शस्य गहनता व दक्षता के विस्तार हेतु रचनात्मक सुझाव देना।
4. जिले में भू–उपयोग, शस्य गहनता व दक्षता से सामाजिक व आर्थिक बाधाओं को ज्ञात करना व उनके निराकरण हेतु सुझाव देना।
5. जिलें में सिंचाई जल सुविधाओं के विकास से भूमि उपयोग, शस्य गहनता व दक्षता के साथ– साथ जनसंख्या, अधिवास परिवहन, संचार, कृषि तकनीक, कृषि यन्त्रों आदि तत्वों का आंकलन करना जो कि आर्थिक परिवर्तन के उत्तरदायी कारक है।

प्रस्तावित शोध के सोपान

गंगानगर व हनुमानगढ़ जिले में कृषि का सर्वाधिक विकास हुआ है। यही कारण है कि जिलों में कृषि आधारित उद्योगों का सर्वाधिक विकास हुआ है। गंगानगर जिले में जे.सी.टी. मील जगजीत कॉटन टेक्सटाइल स्थापित है, इसकी प्रथम इकाई की स्थापना वर्ष 1947 में की गई व उत्पादन वर्ष 1951 में प्रारम्भ किया गया। द्वितीय इकाई से उत्पादन वर्ष 1996 से प्रारम्भ किया गया। इस मील में प्रतिमाह 15 लाख मीटर कपड़ा बनता है। पहले इस मील में केवल मोटा कपड़ा बनता था, किन्तु अब अच्छी किस्म का कपड़ा तैयार किया जाता है। जिसको दे"ा के अन्य क्षेत्रों में निर्यात किया जाता है। इस मील में हजारों की संख्या में श्रमिक कार्यरत थे। जिलों में द्वितीय वृहत उद्योग गंगानगर शुगर मील है। जिसकी स्थापना वर्ष 1935 में की गई। इस मील में राज्य सरकार के पांच प्रति"ात शेयर है। वर्तमान में इसका चुकन्दर प्लांट अत्यधिक लागत तथा कई राजनैतिक कारणों से बन्द कर दिया गया है। इस मील में

International Journal of Research in Economics and Social Sciences(IJRESS)
Available online at: http://euroasiapub.org
Vol. 9 Issue 3, March- 2019
ISSN(o): 2249-7382 | Impact Factor: 6.939 |

गन्ने के रस को उबालने पर जो सीरा निकलता है उसे व्यर्थ न करके शराब बनाने के काम में लिया जाता है। जिससे यहाँ चीनी के साथ–साथ शराब उद्योग भी तेजी से विकसित हुआ है।

प्रस्तावित शोध का महत्व

कृषि विकास में भूमि संसाधन ही आधार होता है। किसी भी क्षेत्र विशेष में भूमि के उपयोग को क्षेत्र के भौतिक, सामाजिक एंव आर्थिक कारक प्रभावित करते है। क्षेत्र में भूमि उपयोग को प्रभावित करने वाले प्रमुख कारक इस प्रकार है :

भौतिक कारकों में जलवायु, मिट्टी, अपवाह् तंत्र, वनस्पति आदि सभी कारक भूमि उपयोग को प्रभावित करते है। भौतिक कारक भूमि उपयोग को प्रभावित करने के साथ–साथ क्षेत्र में कृषि को भी प्रभावित करते है। उदाहरण के तौर पर जलवायु की दृष्टि से क्षेत्र में विभिन्नतांए देखने को मिलती है। इसी प्रकार मिट्टी की संरचना एवं उपजाऊपन भी भूमि उपयोग को प्रभावित करते है। इस प्रकार कृषि की दृष्टि से समतल धरातल, असमतल धरातल की अपेक्षा अधिक उपयुक्त होता है। धरातल के ढाल की तीव्रता मिट्टी अपरदन की समस्या बढ़ाती है। इन भौतिक कारकों के प्रभाव क्षेत्र में कृषि भूमि उपयोग में भिन्नता दिखाई देती है।

सन्दर्भ–ग्रन्थ

1. राय, श्रीराम (1978) : शाहाबाद (बिहार) में भूमि उपयोग, उत्तरदृ भारत भूगोल पत्रिका अंक 14, संख्या 2,

2. शर्मा, सुरेश चन्द्र (1970) : जिला इटावा में भूमि उपयोग, उत्तरदृभारत भूगोल पत्रिका, अंक 6

3. सिंह, बी.वी. एवं सिंह एस.जी. (1974) : शस्य समिश्रण विधि अध्ययन में एक पुनर्विलोकन उत्तर भारत भूगोल पत्रिका अंक 10, संख्या 1–2

International Journal of Research in Economics and Social Sciences(IJRESS)
Available online at: http://euroasiapub.org
Vol. 9 Issue 3, March- 2019
ISSN(o): 2249-7382 | Impact Factor: 6.939 |

4. सिंह जगदीश एवं सिंह बी.आर. (1981) : कृषिगत गहनता एवं विविधता तथा ग्रामीण विकास : गोरखपुर तहसील का प्रतिकात्मक अध्ययन, अंक 17, संख्या 1